आर.एन.आई. पंजीयन क्र. 39596/82 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)

साप्ताहिक

मालव अँचल

वर्ष 47 अंक 27 (प्रति रविवार) इंदौर, 24 मार्च से 30 मार्च 2024 पृष्ठ-8 मूल्य 3 रुपये

गर्भगृह में कैसे लगी आग? जांच रिपोर्ट से खुलेगा राज

हर बिंदु पर होगी तहकीकात, खुलेंगी परतें

उज्जैन। महाकालेश्वर मंदिर में होली पर्व पर भस्मआरती के दौरान भड़की आग की घटना के बाद सभी पुजारी और सेवकों को तुरंत जिला अस्पताल और गंभीर घायलों को इंदौर रेफर किया गया था, जहां उनका उपचार जारी है। बाबा महाकाल के गर्भगृह में हुई इस घटना के बाद सोमवार को पूरे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव तक इस घटना को लेकर चिंतित नजर आए और इस मामले में मजिस्ट्रियल जांच किए जाने के निर्देश दिए, साथ ही यह भी बताया गया कि तीन दिनों में कमेटी इस जांच को पूरा करें और जो भी दोषी हो उनके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए।

महाकालेश्वर मंदिर के गर्भगृह में होली पर्व पर घटित हुई आगजनी की घटना की मजिस्ट्रियल जांच शुरू हो चुकी है। इस घटना की जांच कर रहे मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मृणाल मीना और अपर कलेक्टर उज्जैन अनुकूल जैन अभी तो कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है, लेकिन जांच के दौरान उन्हें कई ऐसी जानकारियां मिल रही है जिससे कि तीन दिन बाद जब वे इस रिपोर्ट को सौंपेंगे तो बाबा महाकाल के गर्भगृह में लगी आग का राज जरूर फाश हो जाएगा।

सोर्स बताते हैं कि जांच के दौरान अधिकारियों को गर्भगृह में आग लगने की अलग-अलग जानकारी मिल रही है। कोई बता रहा है कि आग गुलाल फेंके जाने से लगी तो किसी का कहना है कि घटना के समय रंग गुलाल के स्प्रे भी चलाए गए थे, जिसके कारण भी आग अचानक भड़की और कुछ ही सेकंड में 14 पुजारी और सेवक इस आगजनी में झुलस गए। वहीं बताया यह भी जाता है कि गर्भगृह में आगजनी से सबसे पहले फ्लेक्स जलने की बात सामने आई थी, लेकिन इस दौरान यहां कुछ पर्दे भी लगे हुए थे, जिन्होंने सबसे पहले आग पकड़ी थी। यह जानकारियां जांच अधिकारियों को मिल तो रही है, लेकिन इन बातों में कितनी सत्यता है यह तो अधिकारी जांच के बाद पेश की जाने वाली रिपोर्ट में ही बताएंगे।

जांच करने आती है जीएसआई और एएसआई की टीम-याद रहे कि बाबा महाकाल के शिवलिंग का शरण ना हो इसके लिए सारिका गुरु द्वारा सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका लगाई गई थी जिसके बाद प्रतिवर्ष महाकालेश्वर मंदिर में जांच करने जीएसआई और एएसआई कि टीम पहुंचती है जोकि बाबा महाकाल को अर्पित की जाने वाली सामग्री के साथ ही उन्हें चढ़ाए जाने वाले जल पंचामृत और अन्य सामग्री की शुद्धता को देखती है। याद रहे की कुछ वर्षों पूर्व इस टीम के द्वारा ही होली पर्व पर बाबा महाकाल को हर्बल गुलाल लगाए जाने की बात कही गई थी और मंदिर में बाबा महाकाल को यही अर्पित भी किया जाता था, लेकिन इस वर्ष इस आगजनी की घटना ने यह पोल खोल दी की श्री महाकालेश्वर प्रबंध समिति के जिम्मेदार जो बता रहे थे उनकी बातों में इतनी सत्यता नहीं थी। क्योंकि मंदिर तो ठीक गर्भगृह में भी हर्बल गुलाल की बजाय केमिकल युक्त गुलाल और स्प्रे चलाए जा रहे थे।

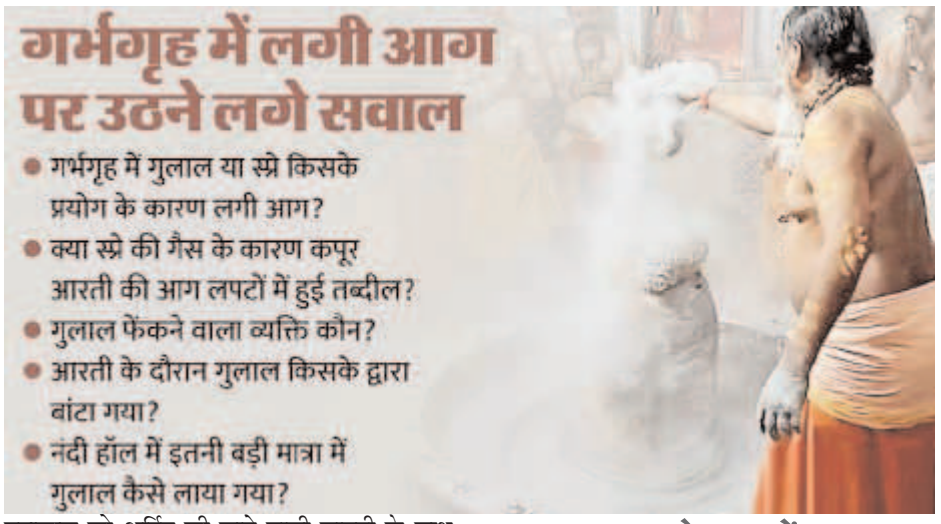

इन अनसुलझे सवालों का जवाब खोजेगी टीम

मजिस्ट्रेट जांच कमेटी के अधिकारी महाकाल मंदिर में जांच कर रहे हैं, जिन्हें इस आगजनी की घटना के वास्तविक कारण को पता करने के साथ ही कुछ ऐसे अनसुलझे सवालों के जवाब भी खोजना है, जिनका जवाब जिम्मेदार देने को तैयार नहीं है। अमर उजाला द्वारा की गई पड़ताल में कुछ ऐसे ही सवाल सामने आए जिनके प्रश्नों के जवाब यदि कमेटी ढूंढ लेगी तो उन्हें इस आगजनी के दोषी का पता चल पाएगा।

महाकाल मंदिर के दस पुजारियों की हालत बेहतर

इंदौर । महाकाल मंदिर में भस्माआरती के दौरान लगी आग में झुलसे 12 पुजारी और सेवकों को इलाज के लिए इंदौर के अस्पताल में भर्ती किया गया है। उनमें से दस पुजारियों की हालत ठीक है, दो पुजारी तीस से चालीस प्रतिशत तक झुलसे है और उन्हें डायबिटीज भी है,इसलिए उनका ज्यादा ध्यान रखा जा रहा है। बुधवार को ठीक हो चुके मरीजों को डिस्चार्ज किया जा सकता है। भस्माआरती के दौरान भभकी आग की चपेट में गर्भगृह में खड़े कुछ पुजारी आ गए थे। पहले उन्हें उज्जैन के जिला अस्पताल ले जाया गया था, फिर उन्हें इंदौर के अरबिंदो अस्पताल में रैफर किया गया।

मंगलवार को पुजारियों को देखने मुख्यमंत्री मोहन यादव भी इंदौर आए थे और उन्होंने पुजारियों से घटना के बारे में भी जानकारी ली। अरबिंदो अस्पताल के डॉ. विनोद भंडारी ने बताया कि दो पुजारी चिंतामण और सत्यनारायण को डायबीटिज है। जलने से उन्हें जो घाव हुए है वे जल्दी ठीक हो जाए और किसी तरह का इंफेक्शन न हो। इस बात का ध्यान रखा जा रहा है। बाकी अन्य पुजारियों और सेवकों की हालत पहले से बेहतर है। बुधवार को चेकअप के बाद उन्हें छुट्टी दी जा सकती है।

रंगपंचमी पर बाहर से गर्भगृह में रंग डालने पर रोक

होली पर भस्माआरती के दौरान लगी आग को लेकर उच्चस्तरीय जांच भी शुरू हो गई है। भविष्य में फिर इस तरह की घटना न हो, इसलिए रंगपंचमी पर गृभगृह के बाहर से रंग-गुलाल उड़ाने पर रोक लगा दी गई है। भस्माआरती के दौरान भी काफी मात्रा में गुलाल उड़ाया गया था। केमिकल युक्त गुलाल के आग में संपर्वस आने के कारण अचानक आग भभक गई थी।

अधीर रंजन बोले-वरुण गांधी परिवार से जुड़े, इसलिए टिकट कटा

कोलकाता (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी ने भाजपा नेता वरुण गांधी को कांग्रेस में शामिल होने का प्रस्ताव दिया है। उन्होंने कहा कि सबसे पुरानी पार्टी में शामिल होने के लिए वरुण गांधी का बहुत स्वागत है। अधीर का यह बयान भाजपा के वरुण गांधी का लोकसभा चुनाव में टिकट काटे जाने के बाद आया है। पीलीभीत से सांसद वरुण को इस बार पार्टी ने टिकट नहीं दिया है। मंगलवार (26 मार्च) को अधीर रंजन चौधरी ने आरोप लगाते हुए कहा, गांधी परिवार से होने के कारण भाजपा ने वरुण गांधी को टिकट नहीं दिया। वरुण को कांग्रेस में शामिल होना चाहिए। अगर वह शामिल होते हैं तो हमें खुशी होगी। वह एक बड़े, सुशिक्षित और साफ छवि के राजनेता हैं। हम चाहते हैं कि वरुण गांधी अब कांग्रेस में शामिल हों। पीलीभीत से दो बार के सांसद वरुण गांधी का टिकट कटने पर फिलहाल कोई बयान नहीं आया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्होंने अपने करीबियों से कहा है कि उनके साथ छल हुआ है और अब वह चुनाव नहीं लड़ेंगे। पीलीभीत में पहले फेज में 19 अप्रैल को वोटिंग होनी है। यहां नामांकन की आखिरी डेट 27 मार्च है। यानी वरुण के पास पीलीभीत से चुनाव लड़ने की घोषणा करने के लिए 24 घंटे से भी कम समय है।

संपादकीय

चुनावी बांड का चंदा भाजपा के लिए मुसीबत?

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा चुनावी चंदे से संबंधित सभी जानकारी चुनाव आयोग को दे दी गई है। चुनाव आयोग ने यह जानकारी अपने पोर्टल पर डाल दी है। जैसे ही यह जानकारी उजागर हुई, उसके बाद हजारों लोग इसकी सच्चाई और वास्तविकता को जानने के लिए जुट गए। जो जानकारी अभी तक निकल कर सामने आई है, उसके अनुसार चुनावी चंदे के रूप में सबसे ज्यादा राशि भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त हुई है। देश की 22 कंपनियों ने कुल चंदे का लगभग 50 फ़ीसदी चंदा भाजपा को दिया गया है। इनमें जो कंपनियां शामिल हैं उनमें ट्रेडिंग, खनन, धातु, रियल एस्टेट, निर्माण, ऊर्जा और दूरसंचार से लेकर दवा निर्माता कंपनी भी शामिल है। देश की कुल 771 कंपनियों ने 11484 करोड़ रुपए के चुनावी बांड खरीदे थे। इनमें इन 22 कंपनियों की हिस्सेदारी सबसे ज्यादा थी। इसी बीच सरकार द्वारा इन्हें काम भी दिया गया और इनसे चुनाव का चंदा भी भाजपा को ही ज्यादा मिला है। वहीं कुछ ऐसी कंपनियों ने भी भाजपा को चंदा दिया है जिनके यहां ईड़ी और सीबीआई ने छापे डाले थे। छापे के बाद इन कंपनियों ने बांड खरीदकर भाजपा को चंदा दिया है। यह दी गई जानकारी से उजागर हो रहा है। इसी तरह जिन कंपनियों ने बड़े-बड़े चंदे दिए हैं उन्हें सरकार से बड़े-बड़े ठेके, खनन की लीज एवं अन्य सुविधाएं प्राप्त हुईं हैं। चुनावी बांड अब एक प्रमाण के रूप में सामने है। इसे आसानी से झुठलाया भी नहीं जा सकता है। भाजपा को सबसे ज्यादा चंदा देने वालों में फ्यूचर गेमिंग, मेघा ग्रुप, क्विक सप्लाई चैन, एमकेजी समूह, वेदांता समूह, भारतीय एयरटेल जैसी कंपनियां हैं। 22 कंपनियों ने 100 करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि चुनावी बांड के माध्यम से राजनीतिक दलों को चंदे में दी हैं। इसमें 623 करोड़ रुपये का गोपनीय चंदा दिया गया है, जिसके नाम उजागर नहीं किए गए हैं। इसमें से 466 करोड़ रुपए का चंदा भारतीय जनता पार्टी को मिला है। चुनावी बांड के द्वारा दिए गए चंदे को लेकर रोजाना नए-नए तथ्य आश्चर्यजनक रूप से उजागर हो रहे हैं। कई कंपनियों ने अपने मुनाफे से कई गुना ज्यादा राजनीतिक दलों को चंदा दिया है। हाल ही में ईड़ी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया है। मनी ट्रेल के रूप में ईडी का अदालत में कहना है कि शराब घोटाले से जो 100 करोड़ रुपए की राशि आम आदमी पार्टी को मिली थी उसमें से 25 करोड़ रुपए गोवा के चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी ने खर्च किए हैं। इस मामले में के कविता को भी गिरफ्तार किया गया है। आम आदमी पार्टी के ऊपर ईड़ी के अधिकारी मनी लांड्रिंग एक्ट में कार्रवाई करने की बात कर रहे हैं। जिस व्यक्ति के बयान के आधार पर यह मुकदमा बनाया गया है, उसने भी भारतीय जनता पार्टी को ईड़ी की कार्रवाई होने के बाद करोड़ों रुपए का चंदा दिया है। जिस तरह से राजनीतिक दलों के चंदे के तार एक दूसरे के साथ जुड़ रहे हैं राजनीतिक विश्लेषकों का यह मानना है क्या आम आदमी पार्टी के मनी लॉन्ड्रिंग से संबंधित सबूत साबित हो पाएंगे या नहीं लेकिन जिस व्यक्ति के बयान के आधार पर शराब घोटाले का मामला दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी के लोगों पर चलाया जा रहा है, उसकी आंच भविष्य में भारतीय जनता पार्टी में भी पड़ना तय है। चुनावी बांड के रूप में यह एक प्रमाण के तौर पर सामने है। इसको साबित करने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। सुप्रीम कोर्ट के आदेश से चुनावी बांड के संबंध में जो जानकारी सामने आई है उसके बाद केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के ऊपर चंदा लेकर कैसे लोगों को फायदा पहुंचाया जाता है, इसके प्रमाण सामने आ जाने के बाद राजनीतिक दलों की मुसीबत बढ़ सकती है।

आम चुनाव में अर्जुन की आंख चाहिए

ललित गर्ग

लोकसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है और चुनाव का माहौल गरमा रहा है। चुनावों की तारीखें घोषित किए जाने के साथ ही जैसी कि उम्मीद थी, सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच तीखी बयानबाजी और तेज हो गई। कौरव रूपी विपक्षी दल एवं पाण्डव रूपी भाजपा के बीच इस चुनाव में असली जंग सत्य और असत्य के बीच है। सत्ता पक्ष और विपक्ष की यह नोक-झोंक ही तो लोकतंत्र की खूबसूरती है, यह जितनी शालीन एवं उग्र होगी, लोकतंत्र का यह महापर्व कुंभ उतना ही ऐतिहासिक एवं खास होगा। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है और उदार बहुदलीय राजनैतिक प्रणाली का जीवन्त उदाहरण है जिसकी वजह से चुनावों का समय एवं प्रचार विविधतापूर्ण, आक्रामक व रंग-रंगीला होना ही है मगर इसमें कहीं भी कड़वापन, उच्छृंखलता और आपसी रंजिश का पुट नहीं आना चाहिए। य

इस बार के चुनाव में जहां भाजपा नेतृत्व अगले 20 वर्षों का विजन पेश कर रहा है, वहीं कांग्रेस नेतृत्व इसे लोकतंत्र बचाने का आखिरी मौका करार दे रहा है। यानी इन चुनावों का फलक पांच साल के काम के आधार पर अगले पांच साल के लिए जनादेश के सामान्य ट्रेंड तक सीमित नहीं रहा। यह चुनाव असल में आजादी के अमृतकाल यानी वर्ष 2047 के लक्ष्य को सुनिश्चित करने वाला है। इस चुनाव में सर्वाधिक चर्चा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनके भावी देश-निर्माण के संकल्प की है। असल में तो इन चुनाव में भाजपा की जीत तो निश्चित मानी जा रही है, लेकिन वह अपने 400 के लक्ष्य को हासिल कर पाती है या नहीं? भाजपा इसके इर्द-गिर्द अपना अभियान चला रही हैं। जबकि विपक्ष जीत का दावा करते हुए भाजपा के इस बड़े लक्ष्य को हास्यास्पद बता रहा है, उनके प्रति अपनी नापसंदगी से परेशान है। भाजपा के पास बड़ा उद्देश्य है, जबकि विपक्ष भाजपा की काट करने के लिये भी प्रभावी मुद्दे नहीं तलाश पा रही है। भाजपा प्रचार में शामिल हैं - आर्थिक विकास, देश और विदेश में सशक्त राष्ट्रवाद, हिंदुत्व, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, नया भारत-सशक्त भारत, औद्योगिक क्रांति, दुनिया की महाशक्ति बनना, स्थिरता, शांति। विपक्ष इन ही बड़े उद्देश्यों की आलोचना कर रहा है। मोदी इन चुनावों के महानायक है, परिवर्तनकारी व्यक्ति हैं जो स्थिरता का वादा करते हुए वोट मांग रहे हैं। अपने आलोचकों के लिए, वह एक अत्यंत ध्रुवीकरण करने वाले व्यक्ति हैं।

इस बार का आम चुनाव रोमांचक होने के साथ देश में बड़े परिवर्तन का कारण बनेगा। इस चुनाव में सभी पार्टियां सरकार बनाने का दावा पेश कर रही हैं और अपने को ही विकल्प बता रही हैं तथा मतदाता सोच रहा है कि देश में नेतृत्व का निर्णय मेरे मत से ही होगा। इस वक्त मतदाता मालिक बन जाता है और मालिक याचक। बस केवल इसी से लोकतंत्र परिलक्षित है। बाकी सभी मर्यादाएं, प्रक्रियाएं हम तोड़ने में लगे हुए हैं। जो नेतृत्व स्वतंत्रता प्राप्ति का शस्त्र बना था, वही नेतृत्व जब तक पुनः प्रतिष्ठित नहीं होगी तब तक मत, मतदाता और मतपेटियां सही परिणाम नहीं दे सकेंगी। आज देश को एक सफल एवं सक्षम नेतृत्व की अपेक्षा है, जो राष्ट्रहित को सर्वोपरि माने। आज देश को एक अर्जुन चाहिए, जो मछली की आंख पर निशाने की भांति भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध, महंगाई, बेरोजगारी, बढ़ती आबादी, सरकारी खजाने का गलत इस्तेमाल, देश की सीमा-रक्षा आदि समस्याओं पर ही अपनी आंख गडाए रखें। इस दृष्टि से सबकी नजरे मोदी पर ही लगी हैं।

मोदी ही अर्जुन की मुद्रा में हैं जो मछली की आंख पर निशाना लगा सके। वे ही युधिष्ठिर है, जो धर्म का पालन करते हुए दिख रहे हैं। जो स्वयं को संस्कारों में ढाल, मजदूरों की तरह श्रम कर रहे हैं। वे आदर्शों एवं मूल्यों के साथ चुनावों में उतरे हैं, राजनीति की चकाचौंध में धृतराष्ट्र बने नेताओं के लिये वे एक चुनौती है। सभी विपक्षी दलों में आंतरिक लोकतंत्र का अभाव है और परिवारवाद तथा व्यक्तिवाद की छाया है। कोई अपने बेटे को प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहती है तो कोई अपने बेटे को मुख्यमंत्री के रूप में। किसी का पूरा परिवार ही राजनीति में है, इसलिए विरासत संभालने की जंग भी जारी है। ऐसे में मोदी ही सबसे प्रभावी नेता बन कर सामने आ रहे हैं। महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी जैसे पुराने मुद्दे भी उठाए ही जा रहे हैं, लेकिन वोटर के फैसले में इनकी कितनी भूमिका रहेगी यह अभी स्पष्ट नहीं है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की दो-दो यात्राओं से उपजे प्रभाव की परीक्षा भी इन्हीं चुनावों में होनी है। कुल मिलाकर, विपक्ष और सत्ता पक्ष कुछ भी कहे देशवासियों की जागरूक चेतना को देखते हुए यह तय माना जा सकता है कि आम चुनाव का यह लोकतांत्रिक पर्व एक बार फिर देश में लोकतंत्र की जड़ों को गहरा ही करेगा।

विपक्षी दलों ने देश-सेवा के स्थान पर स्व-सेवा में ही एक सुख मान रखा है। आधुनिक युग में नैतिकता जितनी जरूरी मूल्य हो गई है उसके चरितार्थ होने की सम्भावनाओं को इन विपक्षी दलों ने उतना ही कठिन कर दिया गया है। ऐसा लगता है मानो ऐसे तत्व पूरी तरह छा गए हैं। खाओ, पीओ, मौज करो। सब कुछ हमारा है। हम ही सभी चीजों के मापदण्ड हैं। हमें लूटपाट करने का पूरा अधिकार है। हम समाज में, राष्ट्र में, संतुलन व संयम नहीं रहने देंगे। यही आधुनिक चुनावों का घोषणा पत्र है, जिस पर लगता है कि सभी विपक्षी दलों ने हस्ताक्षर किये हैं। भला इन स्थितियों के बीच उन्हें वास्तविक जीत कैसे हासिल हो? आखिर जीत तो हमेशा सत्य की ही होती है और सत्य इन तथाकथित राजनीतिक दलों के पास नहीं है। महाभारत युद्ध में भी तो ऐसा ही परिदृश्य था। कौरवों की तरफ से सेनापति की बागडोर आचार्य द्रोण ने संभाल ली थी।

एक दिन दुर्योधन आचार्य पर बड़े क्रोधित होकर बोले-''गुरुवर कहां गया आपका शौर्य और तेज? अर्जुन तो हमें लगता है समूल नष्ट कर देगा। आप के तीरों में जंग क्यों लग गई। बात क्या है?'' आज लगभग हर राजनीतिक दल और उनके नेतृत्व के सम्मुख यही प्रश्न खड़ा है और इस प्रश्न का उत्तर भी और कहीं नहीं, उन्हीं के पास है। राजनीति की दूषित हवाओं ने हर राजनीतिक दल और उसकी चेतना को दूषित कर दिया है। सत्ता और स्वार्थ ने अपनी आकांक्षी योजनाओं को पूर्णता देने में नैतिक कायरता दिखाई है। इसकी वजह से लोगों में विपक्षी दलों के प्रति विश्वास इस कदर उठ गया है कि चौराहे पर खड़े आदमी को सही रास्ता दिखाने वाला भी झूठा-सा लगता है। आंखें उस चेहरे पर सचाई की साक्षी ढूंढती है। यही कारण है कि दुर्योधन की बात पर आचार्य द्रोण को कहना पड़ा, ''दुर्योधन मेरी बात ध्यान से सुनो । हमारा जीवन इधर ऐश्वर्य में गुजरा है। मैंने गुरुकुल के चलते स्वयं 'गुरु' की मर्यादा का हनन किया है। हम सब राग रंग में व्यस्त रहे हैं। सुविधाभोगी हो गए हैं, पर अर्जुन के साथ वह बात नहीं। उसे लाक्षागृह में जलना पड़ा है, उसकी आंखों के सामने द्रौपदी को नग्न करने का दुःसाहस किया गया है, उसे दर-दर भटकना पड़ा है, उसके बेटे को सारे महारथियों ने घेर कर मार डाला है, विराट नगर में उसे नपुंसकों की तरह दिन गुजारने को मजबूर होना पड़ा। अतः उसके वाणों में तेज होगा कि तुम्हारे वाणों में, यह निर्णय तुम स्वयं कर लो। लगभग यही स्थिति आज के राजनीतिक दलों के सम्मुख खड़ी है। किसी भी राजनीतिक दल के पास आदर्श चेहरा नहीं है, कोई पवित्र एजेंडा नहीं है, किसी के पास बांटने को रोशनी के टुकड़े नहीं हैं, जो नया आलोक दे सकें। जो मोदी रूपी अर्जुन के देश-विकास के बाणों का मुकाबला कर सके।

यह वक्त विपक्षी दलों और उनके उम्मीदवारों को कोसने की बजाय मतदाताओं के जागने का है। आज मतदाता विवेक से कम, सहज वृति से ज्यादा परिचालित हो रहा है। इसका अभिप्रायः यह है कि मतदाता को लोकतंत्र का प्रशिक्षण बिल्कुल नहीं हुआ। सबसे बड़ी जरूरत है कि मतदाता जागे, उसे लोकतंत्र का प्रशिक्षण मिले। हमें किसी पार्टी विशेष का विकल्प नहीं खोजना है। किसी व्यक्ति विशेष का भी विकल्प नहीं खोजना है। विकल्प तो खोजना है भ्रष्टाचार का, अकुशलता का, प्रदूषण का, भीड़तंत्र का, गरीबी के सन्नाटे का, महंगाई का, राजनीतिक अपराधों का। यह सब लम्बे समय तक त्याग, परिश्रम और संघर्ष से ही सम्भव है। धृतराष्ट्र रूपी दलों की आंखों में झांक कर देखने का प्रयास करेंगे तो वहां शून्य के सिवा कुछ भी नजर नहीं आयेगा। इसलिए हे मतदाता प्रभु! जागो! ऐसी रोशनी का अवतरण करो, जो दुर्योधनों के दुष्टों को नंगा करें और अर्जुन के नेक इरादों से जन-जन को प्रेरित करें।

बीए-एलएलबी, एमबीए और अन्य कोर्सों की परीक्षाएं थी लंबे समय से लंबित

पहले और तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं अगले महीने लेगी यूनिवर्सिटी

इंदौर। *देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी ने एमबीए, बीए एलएलबी, एलएलबी और बीएड पहले और तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाओं यह तारीख है घोषित कर दी है। यह परीक्षाएं लंबे समय से लंबित रही है। यूनिवर्सिटी के अनुसार परीक्षाएं अप्रैल के पहले सप्ताह से आयोजित कराने का निर्णय लिया है। यूनिवर्सिटी अधिकांश पेपर अप्रैल में लेने की योजना बना रही है, जबकि यदि कोई पेपर बचा है तो इसे जून में जारी रखा जाएगा।*

परीक्षा नियंत्रक डॉ. अशेष तिवारी ने बताया कि परीक्षाओं को पुनर्निर्धारित करने की आवश्यकता है, विशेषकर अंतिम वर्ष की परीक्षाओं को अप्रेल के पहले सप्ताह में पीजी परीक्षा आयोजित करने की योजना बनाई है, क्योंकि इन परीक्षाओं में पहले ही देरी हो चुकी है। इस बीच विश्वविद्यालय जल्द ही पीजी पाठ्यक्रमों और स्नातक तृतीय वर्ष पाठ्यक्रमों के लिए भी पुनर्निर्धारित समय सारणी की घोषणा करेगा। परीक्षा विभाग से 20 फीसदी कर्मचारियों को चुनाव ड्यूटी के लिए बुलाया। एग्जाम कंट्रोलर के मुताबिक, परीक्षा विभाग से लगभग 20 फीसदी कर्मचारियों को पहले ही चुनाव ड्यूटी के लिए बुलाया जा चुका है, जिससे डीएवीवी के लिए परीक्षा आयोजित करना एक चुनौती बन गया है। आने वाले दिनों में लगभग 60 से 70 फीसदी कर्मचारी चुनाव संबंधी कार्यों में शामिल हो जाएंगे, जिससे परीक्षा करना चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। यहां तक कि मूल्यांकन कार्य भी बाधित होगा।

सीयूईटी की भी तैयारी कर रहे हैं छात्र-परिवर्तनों से लगभग 40 हजार छात्र प्रभावित होंगे, उनमें से आधे से अधिक 11 से 28 मार्च के बीच सीयूईटी पीजी परीक्षा की तैयारी भी कर रहे हैं। ये परीक्षाएं जो पहले 15 मार्च से शुरू होने वाली थीं, उनमें देरी हो गई क्योंकि विश्वविद्यालय में प्रश्न पत्र तैयार नहीं थे। कई प्रोफेसरों को चुनाव प्रशिक्षण में देरी हुई थी। इस प्रकार विश्वविद्यालय ने 25 मार्च के बाद आयोजित होने वाली परीक्षा में देरी कर दी थी। डीएवीवी अन्य विश्वविद्यालयों के साथ समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार है, जिसमें नेशनल ताइपे यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी और ताइवान में एशिया यूनिवर्सिटी, नेशनल पिंग तुंग यूनिवर्सिटी, नेशनल चिन यी यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी और काऊशुंग आइएसयू जीएमसी शामिल हैं।

नगर निगम कर्मचारियों की प्रमुख मांगों का शीघ्र निराकरण करें -बंसल

इनपानि कर्मचारी परिषद् ने महापौर और निगम कमिश्नर को लिखा 11 सूत्रीय मांग पत्र

इंदौर। *लोकसभा चुनाव की तैयारियॉ जारी है, इस बीच इ.न.पा.नि. कर्मचारी परिषद् के अध्यक्ष सुनील बंसल ने महापौर पुष्यमित्र भार्गव और निगम कमिश्नर शि?वम वर्मा को 11 सूत्रीय मॉग पत्र लिखकर नगर निगम, इन्दौर के कर्मचारियों की प्रमुख मॉगों का शीघ्र निराकरण करने की मॉग की है।*

भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध इ.न.पा.नि. कर्मचारी परिषद् के अध्यक्ष सुनील बंसल द्वारा मांग की गई है कि शासन आदेश अनुसार सभी पात्र कर्मचारियों को शीघ्र समयमान वेतनमान का लाभ दिया जाये। 31 दिसम्बर 2019 तक के इन्दौर नगर निगम में नियुक्त सभी मस्टर कर्मचारियों को विनियमित किया जाये। 29-29 दिनों पर नियुक्त मस्टर कर्मचारियों को 89-89 दिन पर नियुक्त किया जाये। साथ ही रिक्त पदों पर पदोन्नति करने, तीन वर्ष से अधिक प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके मूल शासकीय विभागों में वापस भेजे जाने, म.प्र. नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 69 (4) का उपयोग कर जूनियर कर्मचारियों को उच्च पद का प्रभार दिया गया है, उसे निरस्त कर वरियता एव योग्यता के आधार पर उच्च पदों का प्रभार देने की मॉग की गई है।

इ.न.पा.नि. कर्मचारी परिषद् की ओर से यह भी मॉग की गई है कि आगामी 3 वर्षों में सेवानिवृत होने वाले निगम कर्मचारियों की सूची जारी की जाये। साथ ही निगम कर्मचारियों की सी.आर (गोपनीय चरित्रावली) प्रतिवर्ष मार्च अप्रैल माह में लिखने हेतु उच्च अधिकारियों को निर्देशित किया जाये। अनुचित रूप से निलिंबित कर्मचारियों को पुन- बहाल किया जाये। कर्मचारियों की निलंबन अवधी का निराकरण शासन आदेश अनुसार अधिकतम 5 माह में किया जाये तथा रिक्त पदों पर व्यापम के माध्यम से पहले नियुक्ति न करते हुए वर्षों से मस्टर रोल पर काम कर रहे कर्मचारियों को स्थायी पदों पर नियुक्त करने जैसी मॉगों को लेकर कर्मचारी परिषद् के अध्यक्ष सुनील बंसल ने महापौर पुष्यमित्र भार्गव और निगम कमिश्नर शिवम वर्मा से कर्मचारियों के हित में उनकी मॉगों का शीघ्र निराकरण करने का अनुरोध किया है।

चुनाव में कार्यकर्ता को दिए जाने वाले भोजन थाली की कीमत 80 रुपए तय

इंदौर।लोकसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही चुनाव आयोग ने प्रत्याशियों द्वारा किए जाने वाले खर्च की सीमा भी तय कर दी है। आयोग के अनुसार प्रत्याशी अधिकतम 95 लाख रुपए चुनाव व्यय कर सकता है। वही निर्वाचन आयोग द्वारा सभी वस्तुओं की कीमत भी तय कर दी गई है। इंदौर शहर में निर्वाचन कार्यालय द्वारा भोजन थाली की कीमत 80 रुपए तय की गई है।

जानकारी अनुसार जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा प्रत्याशियों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली हर वस्तु की कीमत तय की जाती है। साथ ही चुनाव मैदान में उतरने वाले नेता द्वारा उस कार्य पर किए जाने वाला खर्च इसी कीमत के हिसाब से जोड़ा जाता है। लोकसभा चुनाव के लिए आचार संहिता लागू होने के साथ ही प्रक्रिया शुरू हो गई है। इस प्रक्रिया के शुरू होने के साथ ही हर संसदीय क्षेत्र में जिला निर्वाचन अधिकारी के द्वारा भाव तय करने का काम भी शुरू हो गया है। चुनाव का सीधा संबंध भोजन भंडारे से रहता है। चुनाव मैदान में उतरने वाले नेता अलग-अलग समूह के लोगों के लिए भोजन का आयोजन करते हैं। ऐसे में निर्वाचन कार्यालय के द्वारा जो भोजन की दर तय की जाती है वह महत्वपूर्ण होती है। उस दर के हिसाब से भोजन करने वालों की संख्या को देखते हुए उतना पैसा संबंधित प्रत्याशी के चुनाव खर्च में जोड़ दिया जाता है। चुनाव कार्यालय ने आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए भोजन की थाली के रेट तय कर दिया है। इस रेट के अनुसार भोजन की थाली का रेट 80 रुपए तय किया है।

डिजिटल एक्सरे मशीन बार-बार हो रही खराब, मरीजों के साथ डाक्टर भी परेशान

मेंटेनेंस करने वाली ठेकेदार फॉर्म समय पर नहीं करती कार्य

इंदौर। एमजीएम मेडिकल कालेज में इस समय मशीन खराब होने के कारण मरीजों के साथ ही डाक्टरों को भी परेशानियों से जुझना पड़ रहा है। क्योंकि कालेज के अंतर्गत आने वाले अस्पतालों में यदि कोई मशीन खराब हो जाती है तो वह एक-एक माह तक ठीक नहीं हो पाती है। वर्तमान में एमवाय अस्पताल की डिजिटल एक्सरे मशीन करीब 20 दिन से खराब पड़ी हुई है। मरीजों का सामान्य एक्सरे ही हो पा रहा है। इसके कारण उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। मरीजों के साथ डाक्टरों के लिए भी यह एक समस्या है। क्योंकि सामान्य की तुलना में डिजिटल एक्सरे में तस्वीर अधिक स्पष्ट नजर आती है। इसके अलावा डिजिटल मशीन में एक्सरे भी जल्दी हो जाते हैं। इस मामले में कई बार विभागों द्वारा शिकायत भी की जा

चुकी है, लेकिन अभी तक मशीन का सुधार कार्य नहीं हो पाया है। इसके अलावा रेडियोलाजी, न्यूरोविभाग, पैथालाजी, हड्डी रोग विभाग में आपरेशन थिएटर की टेबल भी कई दिनों से खराब पड़ी हुई है। बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब यह डिजिटल एक्सरे मशीन खराब हुई हो, इससे पहले भी कई बार खराब हो चुकी है।

कई बार कर चुके सुधार कार्य करने वाली कंपनी को बदलने की मांग-हड्डी रोग विभाग कई बार हाइट कंपनी की कार्यशैली को देखते हुए, इसके खिलाफ शिकायत कर चुके हैं। लेकिन कोई समाधान अभी तक नहीं निकल पाया है। शिकायत में कंपनी पर भी जांच बैठाने की बात कहीं जा चुकी है, क्योंकि कंपनी के पास मशीन सुधार के लिए योग्य कर्मी नहीं है। डाक्टरों ने बताया कि जब भी कोई मशीन खराब हुई हो और उसे कंपनी के कर्मियों ने देखा तो फिर वह आए दिन खराब होती रहती है।

मप्र कांग्रेस को सता रहा बड़ी टूट का डर

क्या मप्र में दोहराया जाएगा 'भागीरथ कांड'

भोपाल। *जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव का परवान गर्म होता जा रहा है। वैसे-वैसे दल बदल की रफ्तार भी तेज होती जा रही है। बदलते सियासी मिजाज भापकर बड़ी संख्या में कांग्रेसी पंजा का साथ छोडक़र कमल थामने में लगे हुए हैं। प्रदेश के सभी 29 संसदीय क्षेत्रों में कांग्रेसियों का पलायन जारी है। इस बीच कांग्रेस को प्रदेश में बड़ी टूट का डर सता रहा है। इस डर के अनुसार पार्टी को आशंका है कि 10 साल बाद एक बार फिर से प्रदेश में 'भागीरथ कांड' दोहराया जा सकता है। गौरतलब है कि 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने भिंड सीट से भागीरथ प्रसाद को टिकट दिया था। टिकट मिलते ही भागीरथ प्रसाद भाजपा में शामिल हो गए और फिर भाजपा से चुनाव लड़ा। हालांकि 2019 में भागीरथ प्रसाद का टिकट काट दिया गया।*

सूत्रों का कहना है कि विधानसभा चुनाव में हार और संगठन में बदलाव के बाद कांग्रेस में जिस तरह की स्थिति बनी हुई है उसको देखते हुए कांग्रेसी अब भाजपा में किसी तरह प्रवेश करने का रास्ता तलाशने में जुटे हैं। यह बात कांग्रेसी भी दबी जुबान से स्वीकारने लगे हैं कि प्रदेश में कांग्रेस का संगठन अब कमजोर हो गया है और कई जिलों में तो कोई भी ऐसा नेता नहीं बचा है जो कांग्रेस पार्टी के पास असरदार हो और लोगों के साथ-साथ संगठन को भी मजबूत बनाकर लोकसभा चुनाव में असरदार हो सके। जिस प्रकार से कांग्रेस के नेताओं का लगातार ही समूचे प्रदेश में भाजपा में जाने का क्रम लगा हुआ है। उससे भाजपा कांग्रेसमय होती जा रही है।

ज्यादा गुट अब भाजपा का हिस्सा

अभी तक करीब 17 हजार से ज्यादा कांग्रेसी भाजपा का हिस्सा बन चुके हैं। आगे भी यह सिलसिला जारी रहने वाला है। यूं तो कांग्रेस के ज्यादा गुट अब भाजपा का हिस्सा बन चुके हैं। सिंधिया और सुरेश पचौरी दोनों कांग्रेस के बड़े गुट थे। दोनों अब भाजपा में हैं। कुछ गुटों के नेता क्षेत्रीय राजनीति की वजह से हासिए पर है। पार्टी सूत्र ने बताया कि शीर्ष नेतृत्व को इस बात की भनक है कि लोकसभा चुनाव के लिए जैसे ही नेताओं का चुनावी अभियान शुरू होगा। तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की मौजूदगी में भी कांग्रेस के शेष बचे गुटों का नेता भाजपा में शामिल हो सकता है। पिछले चुनावों तक कांग्रेस में गुटीय आधार पर प्रत्याशी तय होते थे। लेकिन इस लोकसभा चुनाव में हालात बिल्कुल बिगड़े हैं। कोई भी नेता किसी भी प्रत्याशी के लिए यह भरोसा नहीं दिला पा रहा है कि टिकट तय होने के बाद उसकी निष्ठा नहीं गड़बड़ाएगी। विधानसभा चुनाव में जहां कांग्रेस के क्षत्रयों में अपने गुट के लिए ज्यादा से ज्यादा टिकट दिलाने की होड़ मची थी। इस बाद किसी भी नेता ने अपने समर्थक के लिए लोकसभा टिकट के लिए सिफारिश नहीं की। कुछ नेताओं ने सिर्फ विचार के लिए नाम जरूर आगे बढ़ा हैं। चुनाव जीतने या पाला बदलने की उन्होंने जिम्मेदारी नहीं ली है।

छिंदवाड़ा की भगदड़ ने बढ़ाई चिंता

पार्टी नेतृत्व इस घटनाक्रम से हैरान है कि पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के बेहद करीबी नेता भाजपा में शामिल हो चुके हैं। अब छिंदवाड़ा के कांग्रेस विधायकों की टूट का खतरा भी बरकरार है। खास बात यह है कि मप्र कांग्रेस से नेताओं का बड़ी संख्या में भाजपा में जाने का सिलसिला भी कमलनाथ के घटनाक्रम के बाद से शुरू हुआ था। पिछले महीने फरवरी में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और उनके सांसद बेटे नकुलनाथ का 3 दिन तक भाजपा में शामिल होने का घटनाक्रम चला था, आखिरी वक्त में कमलनाथ ने उनके भाजपा में शामिल होने के घटनाक्रम का पूरा ठीकरा मीडिया पर फोड़ दिया था। कांग्रेस नेतृत्व इसके बाद से ही मप्र को लेकर बेहद गंभीर हो गया था। उसके बाद फिर कांग्रेस के बड़े चेहरा सुरेश पचौरी भाजपा में शामिल हो गए थे। फिर एक के बाद एक कांग्रेस के पूर्व विधायक, सांसद एवं पदाधिकारी भाजपा में शामिल होते गाए। उधर छिंदवाड़ा नगर निगम गठन के बाद पहली बार सत्ता में आई कांग्रेस दो सालों में बिखर गई। विधानसभा चुनाव में हार के बाद पिछले 15 दिनों में 13 पार्षद पाला बदल चुके हैं। सबसे चौकाने वाली बात तो ये हैं कि इनमें चार सभापति और निगम में पार्षद दल के नेता पं. राम शर्मा तक शामिल है। बड़ी संख्या में कांग्रेस पार्षदों के भाजपा में शामिल होने के बाद 33 पार्षदों के साथ भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। ऐसे में निगम अध्यक्ष धर्मेंद्र सोनू मागो का पद खतरे में है। निगम के नियमों के अनुसार दो सालों का कार्यकाल पूरा होने के बाद अध्यक्ष के खिलाफ कभी भी अविश्वास प्रस्ताव आ सकता है, लेकिन इसमें भी दिक्कतें कम नही हैं दरअसल, 33 पार्षदों का बहुमत होने के बाद भी निगम में भाजपा दो गुटों में बंटी हुई है। पहले सात पार्षदों के भाजपा में आने के बाद से ही इन पार्षदों को अपने- अपने खेमे में लाने की मशक्कत शुरु हो गई थी।

बैंक आफ इंडिया के दो अधिकारियों सहित 7 पर मामला दर्ज

भोपाल। प्रदेश के खंडवा बैंक आफ इंडिया के दो अधिकारियों सहित सात लोगों पर मामला दर्ज किया गया है। यह प्रकरण करोड़ों की बंधक संपत्ति को औने-पौने दाम में बेचने को लेकर दर्ज किया गया है। आरोप है कि बैंक में बंधक रखी संपत्ति को फर्जी दस्तावेज बनाकर साठगांठ से सस्ते में बेच दिया। इस पर अदालत ने बैंक के दो अधिकारियों समेत पालीटेक्निक कालेज के दो वरिष्ठ पदाधिकारियों समेत सात लोगों पर धोखाधड़ी, कूटरचना, फर्जी दस्तावेज और मिलीभगत जैसी धाराओं में प्रकरण दर्ज कर संज्ञान लिया है। खंडवा के व्यापारी वीरेंद्र अग्रवाल ने बैंक से वेयर हाउस बनाने और व्यापार करने के लिए लगभग चार करोड़ रुपये का ऋण लिया था। इसके एवज में वेयर हाउस और एक मकान को बंधक रखा था। इस संपत्ति की कम वैल्यू आंक कर आरोपितों ने सारे दस्तावेज जिला पंजीयक कोर्ट और अन्य जगह दे दिए। बाद में यह सब फर्जी साबित हुए। मामला कोर्ट में आने पर प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट मोहन डाबर के न्यायालय ने बैंक के दो अधिकारी अभिनीत तिवारी और तत्कालीन ब्रांच मैनेजर राहुल तिवारी के अलावा खरीदार जनरलवीरसिंह उर्फ राजू भाटिया के अलावा बैंक के वैल्यूअर इंजीनियर अश्विनी बाहेती और फर्जी प्रमाण पत्र देने वाले पालीटेक्निक के प्राचार्य अपूर्व साकल्ले, ड्राफ्समैन बीडी सनखेरे के अलावा ठेकेदार दीपेश राठौर पर कई धाराओं में मामला दर्ज किया है।

व्यापारी अग्रवाल ने मीडिया के समक्ष दस्तावेज पेश करते हुए बताया कि कलेक्टर कोर्ट ने जिस संपत्ति की वैल्यू छह करोड़ 15 लाख रुपये बताई थी। इसे बैंक ने सिर्फ डेढ़ करोड़ रुपये में धोखाधड़ी कर साठगांठ के तहत बेच दिया। सारे कागज और दस्तावेज भी बड़े अधिकारियों और ठेकेदारों से बनवा लिए, जो अदालत में फर्जी साबित हुए हैं। इसमें बड़ी भूमिका बैंक के वेल्यूवर अश्विन बाहेती की भी है। कागज पेश करते हुए कहा कि वर्ष 2013 में तीन करोड़ 20 लाख रुपये से अधिक वैल्यू और गाइडलाइन दो करोड़ 95 लाख बताई गई थी। इसी वैल्यूवर ने 2021 में इसी संपत्ति की गाइडलाइन एक करोड़ 43 लाख रुपये बता दी जबकि आठ साल में संपत्ति की कीमत कई गुना बढ़ चुकी है। दो बैंक के अधिकारियों और राजू भाटिया ने साठगांठ कर 2300 वर्गमीटर पर बने वेयर हाउस को मात्र 613 वर्गमीटर बताकर रजिस्ट्री भी कर दी। अग्रवाल ने इसकी शिकायत की। इस पर राजू भाटिया ने ठेकेदार दीपेश राठौर से मिलकर फर्जी दस्तावेज तैयार करवाए और यह बताने का प्रयास किया कि वेयर हाउस जर्जर हालत में था। जिसे रजिस्ट्री कराने के पहले ही तोड़ दिया गया और रजिस्ट्री कराने के बाद मात्र 20 दिनों में वापस बनाकर खड़ा कर दिया गया। आरोपित भाटिया ने पालीटेक्निक के प्राचार्य अपूर्व साकल्ले और बीडी सनखेरे के साथ मिलकर फर्जी प्रमाण पत्र भी ले लिया। जिसमें बताया गया कि वेयर हाउस तोड़कर नया बनाया गया है। पंजीयक कोर्ट द्वारा शासन की स्वतंत्र एजेंसी से जांच कराई गई, जिसमें वेयर हाउस पुराना बताया गया। इसके अलावा एसडीएम न्यायालय द्वारा भी जांच कराई गई, जिसमें राजस्व निरीक्षक व पटवारी प्रतिवेदन मौका पंचनामा तैयार कर वेयर हाउस का निर्माण पुराना होना बताया गया।

लगातार चौथी बार भोपाल से कांग्रेस ने दिया नया उम्मीदवार

भोपाल। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल की लोकसभा सीट हमेंशा ही कांग्रेस के लिए मुसीबत का कारण रही है। भोपाल लोकसभा सीट भाजपा का गढ़ रही है। पिछले 35 सालों से भाजपा भोपाल लोकसभा सीट से चुनाव जीत रही है। कांग्रेस ने भाजपा को चुनौती देने पिछले चार बार से नए उम्मीदवार चुनावी मैदान में उतारे हैं लेकिन हर बार कांग्रेस को भाजपा प्रत्याशियों से हार का मुंह देखना पड़ रहा है। इस बार कांग्रेस ने अरुण श्रीवास्तव को भोपाल लोकसभा सीट पर अपना उम्मीदवार बनाया है। पुराने कांग्रेसी नेता अरुण श्रीवास्तव को पार्टी के अंदर पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह गुट का माना जाता है। इस बार उनको टिकट तो मिल गया लेकिन भाजपा का 35 साल का रिकॉर्ड उनके सामने एक बड़ी चुनौती है। भाजपा ने भोपाल लोकसभा सीट से पूर्व महापौर आलोक शर्मा को चुनावी मैदान में उतारा है। चूंकि भोपाल लोकसभा सीटों पर कायस्थ वोटर्स की संख्या भी काफी अधिक है तो यह सोचकर कांग्रेस ने इस बार कायस्थ उम्मीदवार दिया। स्थानीय स्तर पर कायस्थ समाज में अरुण श्रीवास्तव की अच्छी पैठ बताई जाती है। लेकिन यहां दूसरे समाज के वोटर्स भी अच्छी खासी संख्या में हैं और अभी तक उनका झुकाव भाजपा की तरफ देखा गया है।

35 साल से कांग्रेस का सूखा-भाजपा भोपाल लोकसभा सीट पर बीते 35 साल से लगातार चुनाव जीत रही है। 1989 में भाजपा के सुशील चंद्र वर्मा यहां से चुनाव जीते थे। इसके बाद 1991 से लेकर 1998 तक लगातार सुशील चंद्र वर्मा एक तरफा यहां से चुनाव जीतते रहे। 1999 में यहां से उमा भारती चुनाव जीती। फिर 2004 से लेकर 2009 तक लगातार कैलाश जोशी भोपाल सीट से लोकसभा चुनाव जीते। फिर 2014 में आलोक संजर और फिर 2019 में साध्वी प्रज्ञा ठाकुर भोपाल लोकसभा सीट से चुनाव जीती। इस तरह 35 साल से लगातार भोपाल सीट पर सिर्फ भाजपा उम्मीदवार ही चुनाव जीत रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस इस सीट पर कितना कुछ नया कर पाती है, ये आने वाला वक्त ही बताएगा।

मप्र में कैसे सुधरे की शिक्षा व्यवस्था

कहीं स्कूलों में शिक्षक नहीं, तो कही छात्र नहीं

भोपाल।*मप्र में स्कूली शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए सरकार कई स्तरों पर काम कर रही है। इसके लिए निजी स्कूलों का मुकाबला करने के लिए सीएम राइज स्कूल खोले जा रहे हैं। लेकिन शिक्षकों की कमी और मॉनीटरिंग के अभाव में शिक्षण व्यवस्था पूरी तरह चरमराई हुई है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि प्रदेश के करीब 3726 स्कूलों में एक भी शिक्षक नहीं है, वहीं सैकड़ों स्कूल ऐसे हैं जहां शिक्षक तो हैं लेकिन छात्र नहीं है। ऐसे में मप्र की शिक्षा व्यवस्था कैसे सुधरेगी?*

दरअसल, मप्र में शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह बेपटरी है। आलम यह है कि शहरी क्षेत्रों में तो शिक्षकों की भरमार है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षक जाने को तैयार नहीं है। सबसे ज्यादा दयनीय स्थिति आदिवासी जिले बड़वानी व धार की है। दोनों जिलों के जीरो टीचर वाले स्कूलों की संख्या 516 है। हालात ऐसे हैं कि पचास फीसदी स्कूलों में प्राचार्य ही नहीं हैं। शिक्षा विभाग के जनवरी 2024 जारी आंकड़ों में सामने आया था कि प्रदेश के 74 हजार सरकारी स्कूलों में से पौने चार हजार में एक भी शिक्षक नहीं है। आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश के 3726 सरकारी स्कूलों में एक भी शिक्षक नहीं है, जबकि 895 स्कूलों में एक भी बच्चे का नामांकन नहीं हुआ है, लेकिन यह स्कूल चल रहे हैं। इतना ही नहीं प्रदेश के 460 सरकारी स्कूल ऐसे हैं, जिनमें एक भी बच्चा व एक भी टीचर नहीं है, लेकिन बिना बच्चों व टीचरों के खाली पड़े स्कूल चालू है।

14 जिलों में शिक्षकों की सबसे अधिक कमी

जानकारी के अनुसार, प्रदेश के 14 जिले ऐसे हैं, जिनमें ज्यादा सरकारी स्कूलों में एक भी शिक्षक नहीं है। इनमें अलीराजपुर के 148, बड़वानी के 341, छिंदवाड़ा के 156, देवास के 104, धार के 175, होशंगाबाद के 130, कटनी के 145, खरगौन के 139, रतलाम के 105, रीवा के 128, सतना के 129, सिवनी के 111, शिवपुरी के 143, सिंगरौली के 143 स्कूल शामिल है। भोपाल में जीरो टीचर वाले चल रहे 29 स्कूल भोपाल जिले के 859 स्कूलों में करीब साढ़े पांच हजार शिक्षकों के स्वीकृत पद है। इन पदों की तुलना में करीब एक हजार शिक्षक ज्यादा है। बावजूद इसके भोपाल में ही 29 सरकारी स्कूल ऐसे है, जिनमें एक भी शिक्षक नहीं है। भोपाल में जीरो नामांकन वाले शासकीय व प्राइवेट स्कूलों की कुल संख्या 242 है। इसमें 9 शासकीय व 233 प्रायवेट स्कूल हैं। जीरो टीचर वाले शासकीय व प्रायवेट स्कूलों की कुल संख्या 223 है। इसमें 29 शासकीय व 194 प्रायवेट स्कूल है। जीरो नामांकन व जीरो टीचर वाले कुल प्राइवेट व शासकीय स्कूल 76 हैं, इसमें 5 शासकीय व 71 प्रायवेट स्कूल हैं। दरअसल दो साल पहले स्कूल शिक्षा विभाग में नवीन स्थानांतरण नीति बनाई थी। समय निकल जाने के कारण वर्ष 2022 में इस नीति के अनुसार स्थानांतरण नहीं किए गए। पिछले साल 2023 में नवीन स्थानांतरण नीति के अनुसार अधिकारियों व शिक्षकों के तबादले होना थे, लेकिन चुनावी साल में भी नई नीति लागू होने से पहले घात हो गई। नवीन नाती को हो भ जमे शिक्षकों को ग्रामीण इलाकों साथ नहीं भर्ती के शिक्षकों की पदस्थापना ग्रामीण इलाको में खाली पड़े स्कूलों में की जाना थी, लेकिन इस नीति में भी संशोधन कर दिया कर दिया गया। नतीजा यह निकला कि ग्रामीण जिलों के स्कूल खाली पड़े रहे और शहरी क्षेत्रों में शिक्षकों की भरमार हो गई है। इसके साथ ही दो बार हुए ऑनलाइन स्थानांतरण के कारण शिक्षकों ने मनचाही जगहों पर तबादले करा लिए। इस कारण भी ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूल खाली हो गए। स्कूल शिक्षा विभाग में अधिकारियों की गलत नीतियों के कारण बड़ी संख्या में मामले कोर्ट में पहुंचते हैं। इतना ही नहीं कोर्ट आयुक्त लोक शिक्षण व संचालक को कड़ी फटकार भी लगा चुका है। विभाग की बात करें, तो उसके पास शिक्षकों की सही ग्रेडेशन लिस्ट तक नहीं है, जिस कारण यूडीटी के उच्च पद के प्रभार की प्रक्रिया रुकी हुई है। विभाग की भर्ती प्रक्रिया में भी गड़बड़ी है। अब भर्ती प्रक्रिया में ईडब्ल्यूएस के पदों पर भर्ती नहीं देने के कारण हाईकोर्ट ने हाल ही में नई भर्ती पर रोक लगा दी है।

उमंग सिंगार ने दी थी चुनौती

लोकायुक्त की नियुक्ति को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से मांगा जवाब

भोपाल।लोकायुक्त की नियुक्ति के मामले में शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट मध्यप्रदेश सरकार को नोटिस जारी किया है। यह नोटिस नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार की याचिका पर दिया गया है। उमंग सिंगार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि मध्यप्रदेश के लोकायुक्त की नियुक्ति में असंवैधानिक प्रक्रिया अपनाई गई है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को मध्यप्रदेश के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार की याचिका पर नोटिस जारी किया है। सुप्रीम कोर्ट ने मुख्यमंत्री, मुख्य न्यायाधीश और विपक्ष के नेता के बीच परामर्श प्रक्रिया के लिए दिशा निर्देश तय करने का निर्णय लिया है। उमंग सिंगार ने सुप्रीम कोर्ट में लोकायुक्त की नियुक्ति को इस आधार पर चुनौती दी थी कि वैधानिक रूप से उनसे परामर्श नहीं किया गया था। याचिका में यह भी कहा गया था कि मध्यप्रदेश लोकायुक्त की नियुक्ति कानून के प्रावधानों के खिलाफ गैर-पारदर्शी और मनमाने तरीके से की गई है।

सत्येंद्र कुमार सिंह है एमपी के लोकायुक्त-मध्यप्रदेश के नए लोकायुक्त के रूप में सेवानिवृत्त जस्टिस सत्येंद्र कुमार सिंह ने 10 मार्च को राजभवन में एक सादे समारोह में पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण की थी। राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने सीएम डा. मोहन यादव की मौजूदगी में उन्हें शपथ दिलाई। सत्येंद्र कुमार सिंह ने जस्टिस नरेश कुमार गुप्ता का स्थान लिया था। गुप्ता का कार्यकाल 17 अक्टूबर 2023 को खत्म हो गया था। सत्येंद्र कुमार सिंह की इस पद पर नियुक्ति को लेकर प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने गंभीर सवाल उठाए थे। कांग्रेस ने इस नियुक्ति को तत्काल रद्द करने की मांग की थी। उमंग सिंगार ने अपने सोशल मीडिया अकाउंड पर एक वीडियो जारी कर इस नियुक्ति पर आपत्ति व्यक्त की थी उमंग ने कहा था कि लोकायुक्त एक महत्वपूर्ण पद है। इस पद पर नियुक्ति में असंवैधानिक प्रक्रिया अपनाई गई। इस नियुक्ति समारोह को तत्काल रोका जाए और नियुक्ति की संवैधानिक प्रक्रिया को अपनाया जाए। सरकार का यह कदम असंवैधानिक है।

मेरे से परामर्श नहीं लिया-उमंग सिंगार ने मीडिया के नाम पत्र लिखकर कहा था कि एपी में लोकायुक्त की नियुक्ति निश्चित रूप से जनहित का कार्य है। सरकार की ओर से एक नाम पर अपना अंतिम फैसला लेकर 9 मार्च को अधिसूचना जारी कर दी गई। इसके बाद सरकार ने अवैध प्रक्रिया अपनाई। नेता प्रतिपक्ष से परामर्श नहीं लिया गया।

विवेक तन्खा ने भी किया समर्थन

इधर, इस मामले में राज्यसभा सांसद एवं जाने माने वकील विवेक तन्खा ने भी समर्थन किया था। तन्खा ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा था कि राज्य शासन की बहुत असंवैधानिक कार्यवाही। बिना विपक्ष के लीडर से वैधानिक परामर्श कोई भी नियुक्ति नोटिफाई कैसे की। सीएम सचिवालय से इतनी बड़ी भूल कैसे हुई? इस बचकानी हरकत से मुख्य न्यायाधिपति की प्रतिष्ठा पर जो आघात पहुंचेगा इसके लिए कौन जिम्मेवार होगा। ऐसी जल्दी क्या थी?

नौवीं व 11वीं की वार्षिक परीक्षा का परिणाम एक अप्रैल को घोषित होगा

भोपाल। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में नौवीं व 11वीं की वार्षिक परीक्षाएं 23 मार्च को समाप्त हो रही है। परीक्षा के ही दौरान उत्तरपुस्तिकाओं को जांचने का काम शुरू हो गया है। हर जिले में चार संकलन केंद्र बनाए गए हैं। यहां से उत्तरपुस्तिकाओं को एक संकुल से दूसरे संकुल के शिक्षकों मूल्यांकन के लिए दी जा रही है। मूल्यांकन कार्य 28 मार्च तक पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। नौवीं व 11वीं की उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन के संबंध में लोक शिक्षण संचालनालय (डीपीआइ) ने निर्देश पुस्तिका जारी किए हैं। इस बार नौवीं में सतत एवं व्यापक अधिगम तथा मूल्यांकन (सीसीएलई) के तहत 20 प्रतिशत अंक दिए जाने का निर्णय लिया गया है। सभी विषयों में सीसीएलई के तहत 20 प्रतिशत, पांच प्रतिशत तिमाही परीक्षा के अंकों का अधिभार और पांच प्रतिशत छमाही परीक्षा के अंकों का अधिभार शामिल है। इसके बाद वार्षिक परीक्षा के अंकों का अधिभार 70 प्रतिशत रहेगा। दोनों कक्षाओं का परिणाम एक अप्रैल को घोषित किया जाएगा। सभी संकुल प्राचार्यों को निर्देशित किया गया है कि पांच अप्रैल तक सभी प्राचार्य अपने स्कूल के परीक्षा परिणाम को विमर्श पोर्टल पर अपलोड करना होगा।

11वीं के मूल्यांकन में सीसीएलई नहीं

वहीं 11वीं के मूल्यांकन में सीसीएलई का किसी भी तरह का अधिभार नहीं होगा। इसमें तिमाही और अर्द्धवार्षिक परीक्षा का अधिभार पांच-पांच प्रतिशत होगा। इसके बाद 90 प्रतिशत वार्षिक परीक्षा का रहेगा। जिन विषयों में प्रायोगिक परीक्षाएं हैं, उनमें सैद्धांतिक और प्रायोगिक का 90-90 प्रतिशत रहेगा।इसके बाद इनके कुल अंकों का 90 प्रतिशत अधिभार दिया जाएगा।

स्कूल से भेजे जाएंगे अंक

स्कूलों के प्राचार्यों को निर्देशित किया गया है कि स्कूल में आयोजित तिमाही, छमाही के पांच-पांच प्रतिशत और सीसीएलई के 20 प्रतिशत अधिभार के अंक परीक्षाफल पत्रक में भरकर मूल्यांकन केंद्रों पर भेजना है।

BOLLYWOOD UPDATE

महारानी गायत्री देवी के किरदार में फिट होना चाहती हैं अनन्या पांडे

एक्ट्रेस अनन्या पांडे बॉलीवुड की सबसे खूबसूरत एक्ट्रेसेज की लिस्ट में शुमार हैं। एक्ट्रेस अपनी फिल्मों से ज्यादा इन दिनों अपनी लाइफ को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। वो आदित्य रॉय कपूर को डेट कर रही हैं। दोनों अक्सर एक साथ स्पॉट किए जाते हैं। अनन्या पांडे हाल में ही लेकमे फैशन वीक में रैंप पर अपने जलवे बिखरते नजर आईं। उनका स्टाइल कमाल का रहा। इस इवेंट के बीच एक्ट्रेस ने एक रियल लाइफ किरदार के बार में बात करते हुए कहा कि वो उसके जीवन को पर्दे पर उतारना चाहती हैं। अब ये किरदार किसी ऐसे-वैसे का नहीं बल्कि महारानी गायत्री देवी का है। अभिनेत्री अनन्या पांडे पर्दे पर जयपुर की महारानी गायत्री देवी का किरदार निभाना चाहती हैं। यह पूछे जाने पर कि अगर उन्हें ऑनस्क्रीन किसी फैशन आइकन का किरदार निभाना हो तो वह कौन होंगी ? अनन्या ने कहा, मुझे लगता है कि गायत्री देवी। दुनिया की सबसे

स्टाइलिश शाही महिलाओं में से एक गायत्री देवी भारत की सबसे खूबसूरत महारानी में से एक थीं। बीमारी के कारण 2009 में 90 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। गायत्री देवी का स्टाइल उस दौर में लोगों को खूब पसंद आता था। ज्वेलरी, कपड़ों से लेकर मेकअप तक, हर चीज उनकी स्टाइलिश और रॉयल होती थी। उनका हेयरस्टाइल भी काफी चर्चा में था। शॉर्ट हेयर के साथ हल्कि पेस्टल साड़ियां और डार्क कलर की लिपस्टिक में वो गजब की लगती थीं।

जयपुर के राजघराने की राजमाता गायत्री देवी का जन्म 23 मई 1919 में लंदन में हुआ था। लंदन और स्विट्ज़रलैंड में शिक्षा ग्रहण करने के बाद उन्होंने जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय से हुआ। वॉग मैग्जीन ने उन्हें दुनिया की दस सबसे सुंदर महिलाओं की लिस्ट में शामिल किया था। अपने फैशन के बारे में बताते हुए अनन्या ने कहा, मैं वही कपड़े पहनती हूं जिसमें कंफर्टेबल महसूस करती हूं, इसलिए मैं हर समय सिर्फ अपने पाजामे में रहती हूं।

जब सुंदरता की बात आती है तो वह नेचुरल रहना पसंद करती हैं, लेकिन जब बात उनके काम की आती है तो वह प्रयोग करना पसंद करती हैं।

शहनाज गिल के फैंस ने बांधे तारीफों के पुल

इन दिनों मुंबई में आयोजित लैक्मे फैशन वीक के पांचवें दिन सलमान खान के रियलिटी शो बिग बॉस 13 से अपनी दमदार पहचान बनाने वाली और किसी का भाई किसी की जान से बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली एक्ट्रेस शहनाज गिल ने जंपसूट में इवेंट में अपना जलवा बिखेरा और शोस्टॉपर बनीं। उन्होंने डिजाइनर दीक्षा खन्ना के लिए रैंप वॉक किया। एसिमेट्रिकल प्रिसिजन टाइटल वाले कलेक्शन में एक्ट्रेस ब्लू कलर के जंपसूट में नजर आईं। इवेंट की शोस्टॉपर रहने के बाद शहनाज गिल ने वहां मौजूद मीडिया से बात की, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है और खूब पसंद किया जा रहा है। अक्सर अपनी बातों

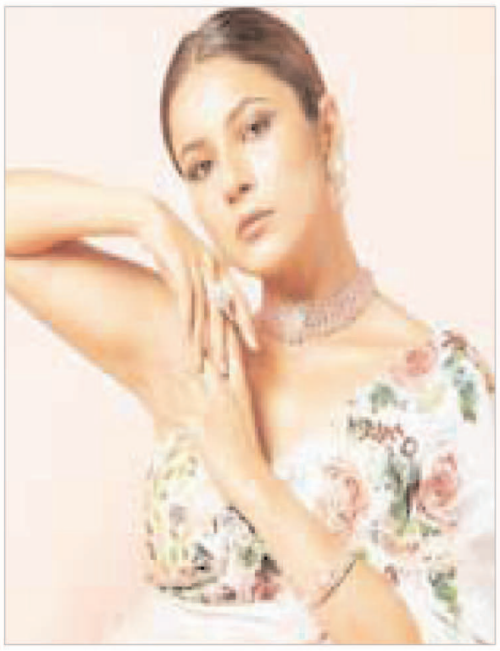

को बोल्डनेस के साथ रखने वाली शहनाज गिल ने एक बार फिर ऐसी बात कह दी, जिसने फैंस का दिल जीत लिया। वीडियो पर काफी बड़ी संख्या में फैंस कमेंट्स कर उनकी बेबाकी की तारीफ कर रहे हैं। वीडियो में एक्ट्रेस ने ये साफ तौर से कहा कि ऐसे इवेंट में भाग लेने के लिए पैसा बहुत मायने रखता है। पैसा बहुत मायने रखता है – शहनाज

मीडिया से बात करते हुए शहनाज ने कहती हैं, मुझे लगता है जब बंदा थोड़ा अमीर होने लगता है तभी ये चीजें कर पाता है। मन तो सबका करता है कि हम भी स्टाइलिश दिखें। लेकिन पैसा बहुत मायने रखता है। पैसा है को सब कर सकते हो। पैसा नहीं तो कुछ नहीं। मुझे लगता है मैं सारी ड्रेस को कैरी कर सकती हूं। बहुत कम्फर्टेबल। मेरे लिए तो यही मंत्र है- जैसी ड्रेस हो वैसे बन जाओ। जब मैं बैक स्टेज होती हूं तो मुझे थोड़ा डर लगता है। जब मैं स्टेज पर होती हूं तो मुझे बिल्कुल डर नहीं लगता, मैं सब भूल जाती हूं। इतना ही नहीं, उनका ये वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिस पर यूजर्स और फैंस कमेंट्स कर एक्ट्रेस की तारीफों के पुल बांध रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा, चाहे कुछ भी हो जाए वो हमेशा अपने दिल की बात कहती हैं।

कोई इंजीनियर तो कोई डिजाइनर, क्या करती हैं इन क्रिकेटर्स की पत्नियां

भारत में क्रिकेट सबसे पॉपुलर खेलों में से एक है, तो यहां क्रिकेटर्स किसी पहचान के मोहताज नहीं होते हैं। इन दिनों सोशल मीडिया के कारण क्रिकेटर्स की पत्नियां भी कम सुर्खियां नहीं बटोरती हैं। चाहें धनश्री वर्मा की बात कर लें या फिर संजना गणेशन की, हर कोई इन दिनों जानता होगा कि यह किसकी पत्नी हैं। लेकिन ज्यादातर लोग उनके काम और उनकी पढ़ाई से जुड़ी कई बातें शायद ना जानते हों। आज हम आपको बताएंगे कुछ स्टार भारतीय क्रिकेटर्स की पत्नियों के बारे में। इस सूची में शामिल सचिन तेंदुलकर से लेकर युजवेंद्र चहल तक सभी की पत्नियां हैं। इनमें से कोई डॉक्टर है, कोई इंजीनियर है तो कोई डिजाइनर है। सभी अलग-अलग प्रोफेशन से जुड़ी हैं या जुड़ी रह चुकी हैं। कुछ के बारे में आप शायद जानते होंगे या कुछ के बारे में आपको आगे यह खबर पढ़कर जानकारी मिलेगी। आइए अब एक-एक करके ऐसे सभी क्रिकेटर्स की पत्नियों के बारे में जानते हैं।

सचिन तेंदुलकर

सबसे पहले बात करते हैं क्रिकेट के भगवान सचिन तेंदुलकर की। ज्यादातर लोग शायद उनके बारे में जानते भी होंगे लेकिन जो नहीं जानते उन्हें बता दें कि सचिन ने 24 मई 1995 में अपने से 6 साल बड़ी अंजली मेहता (अब अंजली तेंदुलकर) से शादी की थी। अंजली पेशे से एक डॉक्टर हैं। वह बाल रोह विशेषज्ञ डॉक्टर हैं। हालांकि एक इंटरव्यू में सचिन ने खुद बताया था कि, बच्चों पर ध्यान देने के लिए और सचिन के व्यस्त रहने के कारण उन्होंने डॉक्टरी से ब्रेक ले लिया था।

रोहित शर्मा

भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा की पत्नी रितिका सजदेह क्रिकेटर की जिंदगी में आने से पहले भी इस खेल से जुड़ी रही हैं। रितिका ने ग्रेजुएशन के बाद स्पोर्ट्स मैनेजर के रूप में अपने प्रोफेशनल करियर की शुरुआत की थी। साल 2008 में एक शूटिंग के दौरान उनकी रोहित शर्मा से पहली बार मुलाकात हुई थी। रितिका युवराज सिंह और हरभजन सिंह जैसे क्रिकेटर्स को पहले से ही जानती थीं। रोहित और रितिका ने करीब 6 साल तक एक दूसरे को डेट किया फिर 13 दिसंबर 2015 को दोनों ने शादी कर ली थी।

जसप्रीत बुमराह

भारतीय टीम के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने 15 मार्च 2021 को मॉडल और स्पोर्ट्स टीवी एंकर संजना गणेशन से शादी की थी। वह एक साफ्टवेयर इंजीनियर के तौर पर भी काम कर चुकी हैं। संजना की गोल्ड मेडलिस्ट रह चुकी हैं। वह एमटीवी के पॉपुलर रियलिटी शो स्प्लिट्सविला में भी हिस्सा ले चुकी हैं। इंजीनियरिंग के पेशे के बाद उन्होंने मॉडलिंग में हाथ आजमाए। आज वह एक फेमस स्पोर्ट्स प्रेजेंटर हैं।

रवींद्र जडेजा

टीम इंडिया के स्टार ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा की पत्नी रिवाबा जडेजा (रीवा सोलंकी) एक पॉलिटीशियन हैं। वह कांग्रेस नेता हरि सिंह सोलंकी की भतीजी भी हैं। इसके अलावा उन्होंने राजकोट के आत्मिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस से मेकेनिकल इंजीनियरिंग से ग्रैजुएशन की डिग्री भी ली है। 2019 में आधिकारिक रूप से बीजेपी में शामिल होने से पहले, रीवा करणी सेना की महिला विंग की प्रमुख भी रह चुकी थीं।

सुरेश रैना और प्रियंका चौधरी रैना

मिस्टर आईपीएल के नाम से मशहूर सुरेश रैना ने 15 अगस्त 2020 को अपने दोस्त और साथी क्रिकेटर एमएस धोनी के साथ ही इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। इस साल आईपीएल में भी वह नहीं खेले। सुरेश रैना की पत्नी का नाम प्रियंका चौधरी है और दोनों बचपन के दोस्त थे और 2015 में उनकी शादी हुई थी। प्रियंका नीदरलैंड में एक बैंक के लिए आईटी प्रोफेशनल के रूप में काम करती थीं। साथ ही वह एक एनजीओ भी चलाती हैं और रेडियो पर टॉक शो भी कर चुकी हैं।

एमएस धोनी और साक्षी धोनी

भारत के सबसे सफल कप्तान रहे एमएस धोनी पर बनी बायोपिक एमएस धोनी द अनटोल्ड स्टोरी आपने जरूर देखी होगी। इस फिल्म में उनकी पत्नी साक्षी के होटल मैनेजमेंट प्रोफेशन की भी जानकारी आपको मिल गई होगी। उन्होंने कोलकाता में रहकर होटल मैनेजमेंट की पढ़ाई की थी और इसके बाद ताज बंगाल होटल में इंटर्नशिप की जहां उनकी पहली मुलाकात एमएस धोनी से हुई थी। फिलहाल शादी के बाद उनके इस काम से जुड़ी कोई जानकारी सामने नहीं आई। ●

टेस्ट इतिहास में सिर्फ अश्विन ही कर पाए ये करिश्मा

रविचंद्रन अश्विन ने इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में कमाल का प्रदर्शन किया है। अश्विन ने इस सीरीज के 5 मैचों में कुल 26 विकेट अपने नाम किए। सीरीज जिताने में उन्होंने अहम भूमिका अदा की। पिछले एक दशक में टीम इंडिया ने घर पर दबदबा कायम किया है। भारत ने आखिरी बार घर पर साल 2012 में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज हारी थी। पिछले 12 सालों में घर पर अश्विन टीम इंडिया के लिए सबसे बड़े मैच विनर रहे हैं। इंग्लैंड के खिलाफ पांचवां टेस्ट अश्विन का 100वां टेस्ट मुकाबला था। इस मैच में अश्विन ने एक खास रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है।

अश्विन ने बनाया ये रिकॉर्ड

रविचंद्रन अश्विन ने इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें टेस्ट मैच की पहली पारी में चार विकेट और दूसरी पारी में 5 विकेट अपने नाम किए। अश्विन ने साल 2011 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट में डेब्यू किया था। उन्होंने तब अपने डेब्यू पर भी पांच विकेट हॉल हासिल किया था। अश्विन 147 साल के टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में पहले ऐसे खिलाड़ी बन गए हैं, जिन्होंने डेब्यू और 100वें टेस्ट मैच में भी 5 विकेट हॉल हासिल किया है।

इंग्लैंड के खिलाफ पूरे किए 100 टेस्ट विकेट

रविचंद्रन अश्विन घर पर इंग्लैंड के खिलाफ 100 टेस्ट विकेट पूरे कर लिए हैं। वह घर पर इंग्लैंड के खिलाफ 100 टेस्ट विकेट लेने वाले पहले खिलाड़ी बने हैं। इसके अलावा घर पर किसी भी टीम के खिलाफ 100 विकेट लेने वाले वह पहले बॉलर हैं और ओवरऑल उनका नंबर तीसरा है। स्टुअर्ट ब्रॉड ने घर पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 106 विकेट लिए हैं। जबकि जेम्स एंडरसन ने घर पर भारत के खिलाफ 105 विकेट हासिल किए हैं।

टीम इंडिया को जिताए कई मैच

रविचंद्रन अश्विन की गिनती दुनिया के महान गेंदबाजों में होती है। अश्विन ने भारत के लिए तीनों फॉर्मेट में अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने भारत के लिए 100 टेस्ट मैचों में 516 विकेट अपने नाम किए हैं। इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में उन्होंने अपने 500 विकेट पूरे किए थे। इसके अलावा वह भारत के लिए सबसे ज्यादा पांच विकेट हॉल लेने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। उनके नाम अब 36 पांच विकेट हॉल दर्ज हैं। ●

बेहद इंस्पायरिंग कहानी है विश्व चैंपियन

महिला मुक्केबाज मैरी कॉम की

मैरी कॉम भारतीय खेल जगत का बड़ा नाम है। विश्व चैंपियनशिप से लेकर ओलंपिक मेडल तक विजेता बनने तक शायद ही ऐसी कोई उपलब्धि होगी, जिसे मैरी कॉम ने हासिल न किया हो। यही वजह है कि मैरी कॉम देश की तमाम महिलाओं को खेल जगत के लिए प्रेरित करती आई हैं। आज हम आपको मैरी कॉम की जिंदगी से जुड़े संघर्षों के बारे में बताएंगे कि कैसे एक साधारण महिला से ओलंपिक विजेता सफर मैरी कॉम के लिए कैसा रहा, आइए जानते हैं-

मैरी कॉम

मैरी कॉम का पूरा नाम चंग्नेइजैंग मैरी कॉम मैंगते हैं। खेल की दुनिया में मैरी कॉम का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है। उन्होंने अब तक देश के नाम कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खिताब अपने नाम किए हैं। साल 2012 के ओलंपिक खेलों में मैरी कॉम ने कांस्य पदक जीता, जिसके साथ ही वो देश के लिए ओलंपिक मेडल जीतने वाली पहली महिला बनी।

विश्व चैंपियनशिप में हासिल किए 6 मेडल

विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में मैरी कॉम की जगह ले पाना बेहद मुश्किल है। साल 2002 में विमेंस वर्ल्ड चैंपियनशिप की शुरुआत हुई। तब से हुए आठ संस्करणों में हर बार भारतीय खिलाड़ी पदक जीतकर आए हैं। पहली विश्व चैंपियनशिप के दौरान मैरी कॉम मात्र 18 साल की थी। उस वक्त उन्होंने साफ-सुथरी मुक्केबाजी शैली के 48 किलोग्राम वर्ग में अपनी जगह बनाई। फाइनल में वो तुर्की कि किक बॉक्सर हुलया साहिन से हार गईं। जिस कारण उन्हें रजत पदक से समझौता करना पड़ा। इसी बीच साल 2008 में उन्होंने अपने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया, इसके बाद करियर के बीच साल 2013 में तीसरे बेटे को जन्म दिया। अब तक मैरी कॉम ने कुल 8 विश्व चैंपियनशिप पदक अपने नाम किया। जो कि किसी भी पुरुष या महिला मुक्केबाज द्वारा जीते गए पदकों में सबसे ज्यादा है। साल 2012 के लंदन ओलंपिक में एमसी मैरी कॉम ने एमेच्योर मुक्केबाजी में इतिहास रच दिया। कई मुश्किलों को पार करते हुए आखिरकार महिला बॉक्सिंग ओलंपिक में मैरी कॉम ने कांस्य पदक जीता। ओलंपिक और विश्व चैंपियनशिप के अलावा एशियाई खेलों में भी मैरी कॉम का प्रदर्शन बेहतरीन रहा है। जहां उन्होंने 5 स्वर्ण 1 रजत पदक अपने नाम किए। ●

एमवाय अस्पताल में शुरू होगी रोबोटिक सर्जरी

प्रपोजल हुआ तैयार, अगले वर्ष से शुरू हो सकती है सुविधा

इंदौर। मध्यभारत के सबसे बड़े शासकीय अस्पताल में मरीजों को अब नई सौंगात मिलने जा रही है। मरीजों के लिए यहां अब रोबोटिक सर्जरी शुरू करने की तैयारी शुरू कर दी गई है। जिससे जटिल आपरेशन की सुविधा भी मरीजों को मिलने लगेगी। इसका प्रपोजल भी तैयार हो चुका है, जिसे भोपाल भेजा जाएगा। अभी तक यह सुविधाएं सिर्फ बड़े निजी अस्पतालों में ही मिलती है। रोबोटिक सर्जरी करने वाला प्रदेश का पहला शासकीय अस्पताल एमवायएच बन जाएगा।

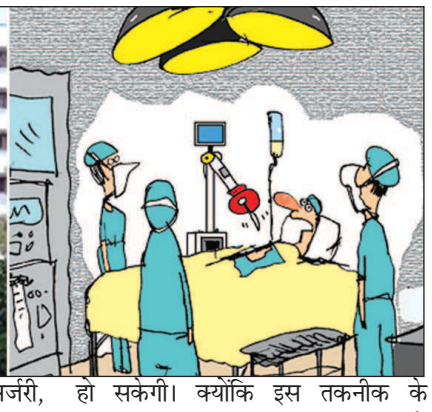

इस संबंध में मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने संभागायुक्त को पत्र भी लिखा था, जिसमें रोबोटिक सर्जरी के माध्यम से आधुनिक सुविधा के साथ ही सरकारी खर्च पर मरीजों को इलाज की सुविधाएं उपलब्ध करने की बात कहीं थी। इसके लिए एमवाय अस्पताल में बन रहे नए ओपरेशन कांप्लेक्स में रोबोटिक सर्जरी के लिए जगह की भी मांग की गई है। भोपाल से मंजूरी मिलने के बाद अस्पताल में इसका काम शुरू हो जाएगा। रोबोटिक सर्जरी शुरू होने से प्रोस्टेक्टोमी, हार्ट सर्जरी, गाल ब्लैडर सर्जरी, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जरी, गाइनिक सर्जरी आदि में मरीजों को सुविधा मिलने लगेगी।

मरीजों को नहीं करना होगा इंतजार

बता दें कि सरकारी अस्पतालों में मरीजों का दबाव अधिक होने के कारण सर्जरी की वेटिंग भी बनी रहती है। ऐसे में ओपन सर्जरी की जगह रोबोटिक सर्जरी का चलन बढ़ने से सर्जरी की वेटिंग कम हो सकेगी। क्योंकि इस तकनीक के माध्यम से मरीज का आपरेशन जल्दी हो जाता है। वहीं जटिल आपरेशन भी इसके माध्यम से आसान प्रक्रिया में हो सकता है।

आधुनिक तकनीक से होंगे आपरेशन

अधिकारियों के मुताबिक एमवाय अस्पताल में सभी ओटी उन्नत किस्म के बनाए जा रहे हैं। यहां मेटल व ग्लास सीलिंग का इस्तेमाल हुआ है। उपकरणों के लिए मांग पत्र कालेज प्रशासन को भेज दिया गया है। माड्यूलर ओटी में वाटर रूफिंग करवा रहे हैं, ताकि किसी तरह के सीपेज की दिक्कतें नहीं हो। तल मंजिल पर बने पुरानी ओटी में इमरजेंसी आपरेशन होंगे। लेकिन इस ओटी कांपलेक्स का काम वर्षो से चल रहा है, यह कब तक बनकर तैयार होगा पता नहीं।

प्रस्ताव तैयार कर लिया है

हमने प्रस्ताव तैयार किया है। नए आपरेशन थिएटर में रोबोटिक सर्जरी को भी उपयोग में लाने की मांग की है। यदि अनुमति मिलती है तो एमवायएच प्रदेश में सबसे पहले रोबोटिक सर्जरी शुरू करने वाला अस्पताल बन जाएगा। जिससे मरीजों को भी सुविधाएं मिलने लगेगी।

- डा. अरविंद घनघोरिया,
प्रोफेसर, सर्जरी विभाग

इंदौर में पुलिस ने खेली दूसरे दिन होली, कमिश्नर ने किया डांस और फिल्मी गीत भी गाए

इंदौर । इंदौर में धुलेंडी पर पुलिस अफसर और जवान सड़कों पर ड्यूटी निभा रहे थे, ताकि कानून व्यवस्था न बिगड़े, लेकिन दूसरे दिन पुलिस विभाग की होली का रंग जमा। डीआरपी लाइन मैदान में बुधवार को दंगा नियंत्रक वाहन वज्र तैनात था,लेकिन उससे प्रदर्शकारियों पर पानी नहीं बरसाया जा रहा था, बल्कि पुलिसवालों को रंग से तरबतर किया जा रहा था।

सारी चिंता छोड़कर पुलिस अफसर और जवान फिल्मी गानों पर थिकरते नजर आए। पुलिस कमिश्नर राकेश गुप्ता भी अलग रंग में नजर आए। उन्होंने पहले रंग बरसे,भीगे चुनर वाली गीत सुनाया। फिर साथी पुलिस अफसरों के साथ उन्होंने डांस भी किया।

डीआरपी लाइन में सुबह 9 बजे से ही पुलिस अफसर और जवान एकत्र होने लगे थे। पहले सभी ने एक-दूसरे पर गुलाल लगाकर और गले मिलकर होली की शुभकामनाएं दी,फिर धीरे-धीरे होली का सुरुर चढ़ने लगा। कोई गीत गा रहा था तो कोई ढोलक की थाप पर नाच रहा था। मैदान के एक हिस्से में पानी डालकर उसमे कीचड़ किया गया था। कुछ देर बाद उसका उपयोग कीचड़ होली के लिए किया गया। चार-पांच पुलिस जवान किसी एक को टांगा-टोली कर ला रहे थे और कीचड़ में लथ पथ कर रहे थे।

महिला पुलिसकर्मी भी होली खेलने में व्यस्त रही। इसके बाद सभी ने व्यंजनों का स्वाद भी लिया। करीब दो घंटे तक होली खेलने के बाद पुलिस जवान अपने घरों की तरफ लौट गए और फिर शाम की ड्यूटी के लिए फिर थाने पहुंचे। उधर ट्रैफिक पुलिस ने भी एमटीएच कपाउंड में होली खेली। यहां भी देर तक होली का रंग जमा रहा।

चिकित्सा उपकरणों के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एचएमडी निरंतर अग्रसर

इंदौर। डिस्पोज़ेबल और ऑटोडिसेबल सिरिंज बनाने वाली दुनिया की अग्रणी कंपनी हिन्दुस्तान सिरिंजिस एंड मेडिकल डिवाइसिस ने सबसे उन्नत व अपनी तरह का पहला डिस्पोजेक्ट सिंगल यूज़ सिरिंज, से टी नीडल के साथ इंदौर में लांच किया है। यह उत्पाद चिकित्सा उपकरणों के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर तथा वैश्विक शक्ति बनाने में मददगार साबित होगा। एचएमडी आने वाले दिनों में देशभर में डिस्पोजेक्ट लॉन्च करेगा । भारत चिकित्सा उपकरणों के विनिर्माण एवं निर्यात के लिए आत्मनिर्भर केन्द्र बनने हेतु प्रयासरत है और यह लांच इसी दिशा में देश को मजबूत करेगा। अपेक्षा है कि डिस्पोजेक्ट स्वास्थ्य कर्मियों को लगने वाली चोटों व उनसे जुड़ी लागत को कम करते हुए स्वास्थ्य उद्योग पर सकारात्मक प्रभाव कायम करेगा।

अब नगर निगम की हर गाड़ी का हेल्थ फिटनेस कार्ड बनेगा

अनुपयोगी सामान को नीलाम करने के निर्देश

इंदौर। आयुक्त शिवम वर्मा द्वारा जिंसी स्थित निगम वर्कशॉप विभाग का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अपर आयुक्त मनोज पाठक, वर्कशॉप प्रभारी मनीष पांडे एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे। आयुक्त वर्मा द्वारा वर्कशॉप विभाग के एंट्री गेट से निरीक्षण प्रारंभ किया गया किस प्रकार से गाड़ियों के आने जाने पर एंट्री की जाती है उसका अवलोकन किया गया ,गाड़ियां आती है, कब गाड़ियां सुधार कर वापस जाती है, कितनी गाड़ी प्रतिदिन आती है, किस किस प्रकार के कार्य किए जाते हैं, आदि प्रकार की जानकारी के साथ ही रिकॉर्ड का संधारण किस प्रकार किया जाता है की जानकारी ली गई एवं आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए गए। आयुक्त वर्मा द्वारा निरीक्षण के दौरान प्रत्येक गाड़ी का हेल्थ (फिटनेस) कार्ड बनाने की निर्देश दिए गए, गाड़ी के हेल्थ कार्ड में गाड़ी में कब टायर बदले, कब आइल बदला, कब बैटरी बदली, सामान्य रूप से कब कब क्या क्या काम किए गए आदि की जानकारी अनिवार्य रूप से रखने के निर्देश दिए गए। साथ ही यह भी निर्देश दिए गए की गाड़ी में कौन सा काम बार-बार निकलता है इसका रिकॉर्ड भी रखें ताकि उसका निराकरण स्थाई रूप से किया जा सके। आयुक्त वर्मा द्वारा निरीक्षण के दौरान वाहनों के ऐसे स्पेयर पार्ट्स जो अनुपयोगी हो गए थे उनको नियमानुसार कार्यवाही कर नीलामी के माध्यम से विक्रय करने के भी निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान वर्कशॉप विभाग में खुले स्थान में धूप में कर्मचारियों के कार्य करने पर छाया के लिए एवं वर्ष के पानी से बचाव के लिए शेड डालने के निर्देश भी दिए गए।

प्रचार सामग्री में प्रकाशक, मुद्रक के नाम-पते सहित प्रिन्ट लाईन होना जरूरी

इंदौर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा निर्वाचन-2024 की घोषणा के साथ ही आदर्श आचार संहिता प्रभावशील हो गई है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आशीष सिंह सभी से आदर्श आचार संहिता के पालन का आग्रह किया है। उन्होंने निर्देश दिये है कि प्रचार सामग्री और प्रचार साहित्य में प्रिन्ट लाईन जरूर हो। इसमें प्रकाशक, मुद्रक का नाम-पता और संख्या अनिवार्य रूप से होना चाहिए। ऐसा नही करने वालों के विरूद्ध कार्यवाही की जायेगी। जिले की राजस्व सीमाओं के भीतर समस्त प्रिंटिंग प्रेस ऑफसेट, पब्लिशर्स इत्यादि मुद्रकों, प्रकाशकों को लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 127- क के तहत निर्वाचन पर्चा, पोस्टरों, पम्पलेटों के मुद्रण के लिए मुद्रक, प्रकाशकों को प्रतिबंधित करते हुए निर्देशित किया गया है कि वे कोई भी ऐसी निर्वाचन पुस्तिका या पोस्टर अथवा निर्वाचन सामग्री प्रकाशित, मुद्रित नहीं करेगा जिसके मुख्य पृष्ठ पर मुद्रक और प्रकाशक के नाम और पते न हो एवं न ही मुद्रित करने के लिए प्रेरित करेगा एवं प्रसारित करेगा। आचार संहिता के तहत कोई भी व्यक्ति ऐसी निर्वाचन पुस्तिका या पोस्टर अथवा निर्वाचन सामग्री प्रकाशित, मुद्रित नहीं करेंगे जिसमें प्रिन्ट लाईन नहीं हो। मुद्रित की जाने वाली अनेकानेक प्रतियों की प्रिंट लाईन में मुद्रक और प्रकाशक के नाम एवं पते स्पष्टतः दर्शाये जाएं तथा संख्या अंकित करना होगी। पर्चा, पोस्टरों, पम्पलेटों के मुद्रित की गई सामग्री की चार प्रतियां और प्रकाशक के घोषणा पत्र अनुबंध अ की एक प्रति मुद्रण के तीन दिवस के अन्दर अनुबंध ब के साथ प्रस्तुत करना होगा। मुद्रित की गई सामग्री की चार प्रतियां तथा घोषणा पत्र के साथ आवश्यक विवरण जिस पर मुद्रक और प्रकाशक के हस्ताक्षर के साथ रबर मुद्रा लगानी होगी। यदि मुद्रक, प्रकाशक की प्रेस की जानकारी मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को प्रस्तुत करेगा तथा जिले से मुद्रित कराए जाने की स्थिति में सम्बन्धित जिला मजिस्ट्रेट को प्रस्तुत करेगा एवं सूचना आर.ओ. कार्यालय को देनी होगी।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी जयश्री जैन द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स 13, प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड इंदौर से मुद्रित एवं 22, प्रेस काम्पलेक्स, प्रेस हाऊस, ए.बी. रोड इंदौर 452008 से प्रकाशित। प्रधान संपादक- डॉ. राजेश जैन, मो. 9425322301 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)